© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

# जाति वर्ग का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

**डॉ0 सियाराम यादव**
**शोध निर्देशक,**
**एसोसिएट प्रोफेसर,**
**शिक्षक–शिक्षा संकाय**
**नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,**
**इलाहाबाद**

**दिनेश सिंह**
**शोधछात्र,**
**(शिक्षाशास्त्र)**
**नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,**
**इलाहाबाद**

**सारांश –** प्रस्तुत अध्ययन जाति वर्ग का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। उद्देश्य के रूप में सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में शोध विधि के रूप में कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश में प्रयागराज जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सभी जाति वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। जो कि विषमजातीय सीमित वास्तविक जनसंख्या है। न्यादर्श के चुनाव हेतु बहुस्तरित न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया जायेगा। जिसमें कुल 300 विद्यार्थियों का चयन जाति वर्ग के आधार पर किया गया है। आंकड़ों के संकलन हेतु डॉ0 (श्रीमती) कमलेश शर्मा द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य अनुसूची का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए एनोवा (प्रसरण) विधि का प्रयोग किया गया है। सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में भिन्नता है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जाति वर्ग का विद्यार्थियों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव है।

**की–वर्ड–** जाति वर्ग, सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, समायोजन।

---

**प्रस्तावना–** मानव जीवन चुनौतियों एवं संघर्षों से परिपूर्ण है। व्यक्ति बालकपन से ही विविध समस्याओं का सामना करता रहता है और अपने आपको वातावरण के अनुकूल करने का प्रयास करता रहता है, जो व्यक्ति जितने अच्छे तरीके से अपना अनुकूलन बना के रखता है वह व्यक्ति अपने जीवन में उतना ही सफलता प्राप्त करता हैं अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के पूर्ति के अतिरिक्त व्यक्ति अपने जीवन में बहुत कुछ चाहता है और यही चाह उसे पल–पल संघर्ष के लिए प्रेरित करती है। अपने अथक प्रयास एवं परिश्रम के फलस्वरूप व्यक्ति अपने आपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त कर ले ऐसा हमेशा संभव नहीं हो पाता है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद दूसरे किसी क्षेत्र का चुनाव करना, अपने लक्ष्य की ऊँचाई को अपनी योग्यता और परिस्थितियों के अनुयार घटा देना, इस प्रकार के संशोधित एवं परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन की संज्ञा दी जाती है।

समायोजन के विषय में अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपने विचार प्रदान किये है जो निम्नवत् है–

**बोरिंग, लैंगफेल्ड व वेल्ड–** *''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।''*

**वोनहेलर–** *''हम समायोजन शब्द को अपने आपको मनोवैज्ञानिक रूप से जीवित रखने के लिए वैसे ही प्रयोग में ला सकते है जैसे कि जीवशास्त्री अनुकूलन शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक या भौतिक दृष्टि से जीवित रखने के लिए करते है।''*

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। साथ ही व्यक्ति परिस्थिति तथा पर्यावरण के मध्य अपने को समायोजित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। अतः समायोजन को सन्तुलित दशा कहा गया है। समायोजन एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा सुखी एवं संतोषप्रद जीवन यापन की राह पकड़ी जा सकती है। वस्तुतः समायोजन हमें मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छी तरह जीने के लिए उसी रूप में आवश्यक है, जैसे कि बदलते मौसम या हालातों में शरीर को जिन्दा रखने के लिए वस्त्रों, खान–पान, रहन–सहन में परिवर्तन लाकर अनुकूलन करने की प्रक्रिया।

संक्षेपतः समायोजन किसी व्यक्ति उस क्षमता एवं मनोदशा को कह सकते है जिसके उपयोग से हम अपने आप को वातावरण के अनुकूल कर लेते है या फिर वातावरण को ही अपने अनुकूल कर लेते है। किसी भी संघर्षपूर्ण स्थिति में व्यक्ति अपने प्रगति के मार्ग पर आगे कैसे बढ़ता है यह उसकी समायोजन क्षमता पर निर्भर करता है।

समायोजन का विद्यार्थियों के जाति वर्ग के आधार पर प्रभाव डालता है जैसा कि पूर्व शोध अध्ययनों से ज्ञात होता है **शनि, शीला के (2015)**[प] ने शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि– लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर सांस्कृतिक रूप से वंचित एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन एवं व्यक्तिगत समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। **कुमारी, पुष्पा (2016)**[पप]. ने शोध कार्य के निष्कर्ष के रूप में पाया–उच्च वर्ग के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। निम्न वर्ग के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक एवं सम्पूर्ण समायोजन में सार्थक अन्तर पायी गयी।

**श्रीवास्तव एवं गुप्ता (2016)**[पपप] ने निष्कर्ष में इंगित किया कि अशिक्षित परिवार एक पशु के समान होता है जिसके पास अपने सोचने समझने की क्षमता लेशमात्र भी नहीं होती। वह अपनी जिन्दगी तो जीता है पर उसके जीवन का मूल लक्ष्य क्या है? उसे इस बात की भनक तक नहीं होती है। इसलिये अब वक्त आ गया है कि हम जितनी जल्दी हो सके अपने कदम सही दिशा की ओर मोड़ लें और शिक्षित समाज का सूर्योदय करें। शिक्षा एक वरदान है जिससे समाज फल–फूल रहा है। शिक्षा के बिना स्वस्थ्य समाज की कल्पना करना नामुमकिन है स्पष्ट है कि शिक्षित परिवार की शिक्षा का प्रभाव बालक के समायोजन व शेक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक रूप से पड़ता है। अतः जब परिवार पूर्ण–शिक्षित होंगे तभी विद्यार्थी पूर्ण समायोजित व उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त कर पायेंगे। **वर्मा, किरन (2017)**[पअ] ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि घेरलू कारक के अन्तर्गत भग्न गृह, माता–पिता का व्यवहार, माता–पिता के बीच अनबन, परिवार की आर्थिक स्थिति, विद्यालय कारकों में अध्यापकों का अधिक प्रभुत्वपूर्ण अधिकार, अध्यापकों का पक्षपातपूर्ण रवैया, विद्यालय में असफलता, विद्यालय में साधन, शारीरिक कारक, सामाजिक कारक, साथी मित्रों का प्रभाव, संवेगात्मक कारक तथा पर्यावरणीय कारक समायोजन को प्रभावित करता है।

अतः कहा जा सकता है कि जाति वर्ग के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः अध्ययनकर्त्ता द्वारा प्रयागराज जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जाति वर्ग के आधार पर समायोजन को जानने का प्रयास किया गया है।

**समस्या कथन–**

**जाति वर्ग का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।**

**शोध का उद्देश्य–**

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. सामान्य एवं अन्य पिछड़ा जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएं–**

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. सामान्य एवं अन्य पिछड़ा जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अन्य पिछड़ा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध–प्रविधि–**

जब किसी भी शोध कार्य में घटनाओं और उसके द्वारा हुये प्रभाव को देखा जाता है या उसके द्वारा विकास को निरूपित किया जाता है तो कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश में प्रयागराज जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् सभी जाति वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। जो कि विषमजातीय सीमित वास्तविक जनसंख्या है। न्यादर्श के चुनाव हेतु बहुस्तरित न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया जायेगा। जिसमें कुल 300 विद्यार्थियों का चयन जाति वर्ग के आधार पर किया गया है। आंकड़ों के संकलन हेतु डॉ0 (श्रीमती) कमलेश शर्मा द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य अनुसूची का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए एनोवा (प्रसरण) विधि का प्रयोग किया गया है।

**आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या –**

**1. जाति वर्ग का विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।**

**भ्ं$_1$ सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में सार्थक अन्तर है।**

**भ्ं$_{01}$ सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।**

**सारणी सं0 –1**

**सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में अन्तर को दर्शाते हुए एफ–अनुपात**

| स्रोत | कि | ै | डै | थ् | सारणी मान |
|---|---|---|---|---|---|
| समूहों के मध्य | 2 | 159157ण्52 | 79578ण्76 | 84ण्56' | थ्ण्05;2ए297द्ध त्र3ण्04 |
| समूहों के अन्दर | 297 | 280456ण्73 | 941ण्13 | | |
| **कुल** | 299 | 439614ण्25 | 80519ण्89 | | |

05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 84.56 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर कि;2ए 297द्ध पर सारणी मान 3.04 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में भिन्नता है।

**सारणी सं0 – 1.1**

**सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात**

| क्र.सं. | चर | न्यादर्श ;छद्ध | मध्यमान ;डद्ध | σक | क | ज.मान | सार्थक / असार्थक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** | सामान्य वर्ग | 100 | 340ण्85 | 4ण्34 | 1ण्64 | 0ण्38 | **असार्थक** |
| | अन्य पिछड़ा वर्ग | 100 | 339ण्21 | | | | |
| **2.** | सामान्य वर्ग | 100 | 340ण्85 | 4ण्34 | 49ण्66 | 11ण्45 | **सार्थक** |
| | अनुसूचित जाति वर्ग | 100 | 291ण्19 | | | | |
| **3.** | अन्य पिछड़ा वर्ग | 100 | 339ण्21 | 4ण्34 | 48ण्02 | 11ण्07 | **सार्थक** |
| | अनुसूचित जाति वर्ग | 100 | 291ण्19 | | | | |

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन के मध्यमानों के मध्य टी–मान 0.38 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। जबकि सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 11.45 एवं 11.07 है, जो .05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में सार्थक अन्तर है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में भिन्नता है अर्थात् जाति का विद्यार्थियों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

**निष्कर्ष–**

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- सामान्य, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में भिन्नता है।
    - सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के प्रतियोगी विद्यार्थियों की समायोजन में नहीं पाया गया।
    - सामान्य एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में अन्तर पाया गया।
    - अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन में अन्तर पाया गया।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जाति वर्ग का विद्यार्थियों के समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव है। वर्तमान समय में जहाँ जाति–पाति को खत्म करने के लिए शिक्षा ने अपना विशेष महत्त्व प्रदान किया है वहीं आज भी ग्रामीण क्षेत्रों एवं पिछडे इलाकों में इसका विशेष महत्त्व है और विद्यालय में शिक्षक ही ऐसा माध्यम है जो इस जाति वर्ग के विशेष चीजों को समाप्त कर सकता है एवं सभी जातियों के विद्यार्थियों को एक–दूसरे के साथ समायोजन करना सिखा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


[प] शनि, शीला के. (2015). सोशियो–पर्सनल एडजेस्टमेण्ट एण्ड एचिवमेन्ट ऑफ कल्चर्ली डिसएडवाण्टेजेड, सेकेण्डरी स्कूल पीपल्स, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, महात्मा गाँधी यूनिवर्सिटी, कोट्टयम, केरला।

[पप] कुमारी, पुष्पा (2016). माध्यमिक स्तर के एकल एवं संयुक्त परिवारों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, समायोजन, नैतिक मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

[पपप] श्रीवास्तव एवं गुप्ता (2016). शिक्षित–अशिक्षित परिवारों का विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, एस.आर.एस.डी. मेमोरियल शिक्षा शोध संस्थान, आगरा, इण्डिया, वॉल्यूम–1, इश्शू–1, पृ0 32–34

[पअ] वर्मा, किरन (2017). विद्यार्थियों में समायोजन की समस्याएँ एवं समाधान, परीफेक्स–इण्डियन जर्नल ऑफ रिर्सच, वॉल्यूम–6, इश्शू–11, पृ0 738–739